आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 1/अंक 2/दिसंबर 2021
Received: 12\11\2021; Accepted: 10\12\2021; Published:24\12\2021

हिंदी काव्य में गाँधी दर्शन

डॉ. वासुदेव शेट्टी
सह प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
महारानी महिला विज्ञान कॉलेज
मैसूरु-570005
मो.नं. : 9448414522
ई-मेल:vasudevshettihindi@gmail.com

डॉ.वासुदेव शेट्टी, हिंदी काव्य में गाँधी दर्शन, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 1/अंक 2/दिसंबर 2021,(103-108)

विश्वविख्यात वैज्ञानिक डॉ. अलबर्ट आइन्स्टीन ने महात्मा गाँधी के निधन के अवसर पर कहा था कि 'आनेवाली पीढ़ियाँ शायद मुश्किल से ही यह विश्वास कर सकेंगी कि गाँधीजी जैसा हाड़-माँस का पुतला कभी इस धरती पर रहा होगा।'

महात्मा गाँधीजी की बारे में लिखते समय शब्दों की कमी महसूस होती है। सारे शब्द घिसेपिटे शब्द जैसे लगते हैं। वास्तव में महात्मा गाँधीजी विश्व के उन महाविभूतियों में से एक है, जिन्होंने अपना सबकुछ देश के लिए न्यौछावर कर दिया। वे उन दिनों में बैरिस्टर थे। वे चाहते तो जिस तरह हम शर्ट बदलते है, वैसे वे कार बदल सकते थे। पर वे देश के लिए अपने आप को समर्पण किया।

सन् 1888 में बैरिस्टरी पढ़कर भारत वापस आ गये और मुम्बई में वकालत करने लगे, वकालत करते समय केवल वे ही मुकदमे लेते थे जो सत्य के पक्ष में हो। सन् 1893 में एक मुकदमे के सिलसिले में बैरिस्टर मोहनदास को दक्षिण अफ्रीका जाना पड़ा। वहाँ उन्होंने देखा कि काले रंगवाले लोगों को द्वितीय श्रेणी का नागरिक समझा जाता था। और इस नाते गोरे लोग अश्वेतों के प्रति अमानवीय व्यवहार करते थे। अनेक सार्वजनिक स्थानों के बाहर इस प्रकार लिखा रहता था—"Dogs and Indians are not allowed", 'कुत्तों और भारतीयों का प्रवेश निषिद्ध है।'

महात्मा गाँधीजी इस अन्याय का सहन नहीं कर पाए। भारत भी पराधीन था। भारत भूमि की स्वाधीनता के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। सत्य, अहिंसा, एकता, शांति तथा विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच सहयोग स्थापित करने के लिए वे संघर्षशील रहे। फलस्वरूप सहज ही गाँधीजी का प्रभाव

साहित्य जगत् पर भी पड़ा। उनके चिंतन दर्शन राष्ट्र नव निर्माण एवं स्वराज्य की क्लपना हिंदी साहित्य के विभिन्न विधाओं में झलकने लगी। स्वाधीनता प्राप्ति के लिए सन् 1920 ई. में महात्मा गाँधी ने असहयोग आन्दोलन आरंभ कर दिया। इस आन्दोलन में लाखों लोगों को गिरफ्तार किया गया। यही नहीं हजारों लोग मारे गए। महात्मा गाँधीजी को वर्षों की जेल की सज़ा दी गई। देश के सभी देशभक्त इस आन्दोलन में भाग लेने लगे।

इन दिनों में जितने भी साहित्यकार थे, वे सभी अपनी कृतियों के जरिए देश के प्रति संवेदनशील रहे। देश की नवयुवकों में नये उमंग भर दिये। उनमें से प्रमुख हैं—

माखनलाल चतुर्वेदी (1898-1968) 'एक भारतीय आत्मा' उनकी काव्य सर्जना की शुरुआत भी उसी समय हुई। वे एक साथ ही कवि, लेखक, पत्रकार और सक्रिय राष्ट्रीय कार्यकर्ता थे। अपने जीवन काल में उन्होंने तीन पत्रों—प्रभा, प्रताप और कर्मवीर का सम्पादन किया। साप्ताहिक 'कर्मवीर' तो राष्ट्रीय जागरण का अग्रदूत था। इस पत्र के माध्यम से उन्होंने जन-जागरण का शंका फूँका तथा नए लेखकों के निर्माण में सार्थक भूमिका निभाई।

चतुर्वेदीजी ने अपनी एक कविता में साहित्य और राजनीति के सम्बन्ध को स्पष्ट करते हुए लिखा है—

सखे, बता दे कैसे गाऊँ, अमृत मौत का दाम न हो,
जगे एशिया, हिले विश्व और राजनीति का नाम न हो।

यदि साहित्य परिवर्तन का समर्थक है तो उसे राजनीति से गहरे अर्थ में जुड़ना ही होगा।

'पुष्प की अभिलाषा' कविता अपने जमाने में काफी प्रसिद्ध हुई थी—

मुझे तोड़ लेना, वनमाली!
उस पथ में देना तुम, फेंक!
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ पर जावें वीर अनेक।

सियाराम शरण गुप्त- मैथिली शरण गुप्त के अनुज हैं। मैथिली शरण गुप्त की उल्लासमयता और बहिर्मुखता के स्थान पर सियाराम शरण गुप्त में संयम, भावनात्मक चिंतन एवं करुणा है। राष्ट्रीयता का गाँधीवादी स्वर दोनों की रचनाओं में देख सकते हैं। मैथिली शरण की अपेक्षा इनकी रचनाओं में कुछ अधिक संयम और वेदना मिश्रित है। 'उन्मुक्त' और 'दैनिक' युद्ध काल की रचनाएँ हैं। उन्मुक्त में है 'हिंसा का है एक अहिंसा प्रत्युत्तर'। एक खास ऐतिहासिक परिस्थिति में इसकी सच्चाई से इनकार नहीं किया जा सकता। 'दैनिकी' में यथार्थ की धरती पर उतर आया है। शोषितों के प्रति असहाय करुणा न दिखा कर वह संघर्ष का आह्वान करता है—

ज्वाला गिरि के बीज, क्रूर शोषण से जमकर
फूट पड़े हैं ठौर-ठौर आग्नेय विकट तरा
काँप उठी है धरा उन्हीं के विस्फोटन में

फैल गयी प्रलयाग्नि-शिखा यह निखिल भुवन में।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (1897-1960) एक कर्मठ राजनीतिक कार्यकर्ता, सफल पत्रकार और ओजस्वी कवि थे। अपने बारे में उन्होंने स्वयं लिखा है—'हम विषपायी जनम के सहे, अबोल कुबोल'; 'ठाठ फकीरावा है अपना, बांधबर सोहे तन पर।' इससे उनके व्यक्तित्व की मस्ती, देश की आन पर अपने को न्योछावर करने की प्रवृत्ति, जोश खरोश की संवेदनात्मक छाप उनकी रचनाओं में देख सकते हैं।

राष्ट्रीय आन्दोलन के तूफानी दिनों के देश के नौजवान ब्रिटिश साम्राज्यवाद की संगीतों के विरुद्ध सीना तानकर चल रहे थे। वे लिखते है—(33वें)

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाये
एक हिलोर इधर से आये, एक हिलोर उधर से आये
प्राणों के लाले पड़ जायें, त्राहि-त्राहि स्वर नभ में छाये
बरसे आग, जलद जल जाये, भस्मसात भूधर हो जाये

सन् 37 में लिखते हैं—

और चाटते जूठे पत्ते उस दिन देखा मैंने नर को
उस दिन सोचा, क्यों न लगा दूँ आज आग दुनिया भर को?
यह सोचा, क्यों न टेंटुआ घोंटा जाय स्वयं जगतिपति का?
जिसमें अपने ही स्वर को रुप दिया इस घृणित विकृति का?

कवि निराशा के क्षणों में भी अपने को कर्मठ 'यथार्थवादी' कहा है। गाँधीजी के प्रति अपार श्रद्धा कई कविताओं में व्यक्त हुई है।

सुभद्राकुमारी चौहान (1904-1948) भी माखनलाल चतुर्वेदी और नवीन की भाँति राष्ट्रीय आन्दोलन से सक्रिय रूप से जुड़ी रही हैं। इस सिलसिले में उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। उन्होंने तत्कालीन राष्ट्रीय भावनाओं को ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सन्दर्भों से इस प्रकार से जोड़ा है कि कहीं जोड़ दिखाई नहीं पड़ता। बुन्देलखण्डी लोकशैली में लिखी गई उनकी कविता 'झाँसी की रानी' अपने समय में काफी प्रसिद्ध हुई। लोग उसे गाया करते थे—

'बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसीवाली रानी थीं।'

रामधारी सिंह दिनकर (1908-1974) इनका पूरा जीवन साहित्य के लिए समर्पित रहा। 1920 से 1940 के बीच दिनकर अपनी समसामयिकता के प्रति जितने सजग और ईमानदार रहे हैं उतना सजग कोई दूसरा कवि को देखना मुश्किल है। वे छायावादी और प्रगतिवादी दोनों धाराओं के बीच आते हैं। इसलिए वे कहीं गाँधीवाद का समर्थन करते हैं तो कहीं सशस्त्र क्रांति का, कहीं कहीं प्रकृति और श्रृंगारिकता की आकांक्षा व्यक्त करते हैं। वे लिखते हैं—

उस पुण्यभूमि पर आज तपी
रे। आन पड़ा संकट कराल;
व्याकुल तेरे सुत तड़प रहे,
डस रहे चतुर्दिक विविध व्याल।

नागार्जुन (1910-1998) श्री नागार्जुन प्रगतिशील कवियों में अपने निर्भीक भाव तथा फक्कड़ स्वभाव के कारण विशिष्ट स्थान प्राप्त कर चुके हैं। यही कारण है कि प्रशासन की जन विरोधी नीतियों की कटु आलोचना करने के कारण इन्हें कई बार कारावास का दण्ड भुगतना पड़ा। कारावास में भी नागार्जुन बड़ी मस्ती के साथ कविताएँ लिखते रहे। अपनी कृति में—

कैसे लिखूँ शान्ति की कविता
अपन चैन को कैसे कड़ियों में बाँधू,
मैं दरिद्र हूँ, पुश्त-पुश्त की यह दरिद्रता
कटहल के छिलके जैसी खुरदरी जीभ से
मेरा लहू चाटती आई
मैं न अकेला....
मुझ जैसे तो लाख-लाख हैं, कोटि कोटि हैं।

वह कोटि-कोटि जन का प्रतिनिधि कवि रहे। एक और उदाहरण में—

बापू के भी लाल निकले तीनों बन्दर बापू के!
सफल सूत्र उलझाऊ निकले तीनों बन्दर बापू के!

इनके व्यंग्य में जटिलता और अर्थ की अनेकानेक छवियाँ नहीं मिलतीं। वे प्रायः सतह के नीचे धँस नहीं पाते।

नरेन्द्र शर्मा (1913-1989) – इनको आधुनिक काल के प्रसिद्ध प्रगीतकार मान जाते हैं। गाँधीजी द्वारा प्रवर्तित सत्याग्रह में भाग लेने के कारण शर्माजी को दो वर्ष का कारावास मिला। ये अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सक्रिय कार्यकर्ता भी रह चुके। वे एक जगह रुद्र रूप भारत शीर्षक में लिखते हैं—

भारत अधिनायक, गण नायक, जागे फिर शंकर प्रलयंकर
जिनका तनिक पार्श्व-परिवर्तन था बिहार भूकम्प भयंकर,
जिनके रोओं के हिलने से नगर गिरे थर-थर भय कातर।

मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964) –भारतीय संस्कृति का अनन्य प्रस्तोत एवं भारत-भारती के गायक मैथिलीशरण गुप्तजी द्विवेदी युग के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि थे। इनकी रचनाओं में देशप्रेम को देख सकते हैं—

निज गौरव का नित ज्ञान रहे,
हम भी कुछ हैं यह ध्यान रहे।
सब जाय अभी, पर मान रहे,
मरणोत्तर गुंजित गान रहे।

सुमित्रानंदन पंत (1900-1977) – प्रेम सौंदर्य एवं प्रकृति के अनुपम कविवर सुमित्रानंदन पंत जी का जीवन संघर्षमय रहा। 1921 में महात्मा जी के असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर कालेज की पढ़ाई छोड़ दी। अपनी भारत माता कृति में लिखते हैं कि—

भारत माता
ग्राम वासिनी....
उसे चाहिए लौह संगठन
सुंदर तन, श्रद्धा दीपित मन,
भव जीवन प्रति अथक समर्पण।

जयशंकर प्रसाद (1890-1937) - भारतीय संस्कृति के अमर गायक प्रसादजी ने नवीन शैली में काव्य रचना प्रस्तुत की है। इनकी कृतियों में देशप्रेम की भावना मानव दर्शन आदि विचार से भरे पड़े हैं।

'हिमाद्रि तुङ्ग श्रृङ्ग' से गीत में प्राचीन भारत के गौरव तथा देशप्रेम को देख सकते हैं—

हिमाद्रि तुङ्ग श्रृङ्ग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती-
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला

स्वतन्त्रता पुकारती
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञा सोच लो
प्रशस्त पुण्य पन्थ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो।
असंख्य कीर्ति रश्मियाँ,
विकिर्ण दिव्य दाह सी
सपूत मातृ भूमि के
रुको न शूर साहसी....

गाँधीजी के संपूर्ण अद्‌भुत व्यक्तित्व का चित्रांकन कविवर पंत ने इस प्रकार किया है जो सर्वथा अनोखा और हृदयस्पर्शी है—

'तुम मांसहीन, तुम रक्त हीन
हे अस्थिशेष। तुम अस्थिहीन
तुम शुद्ध बुद्ध आत्मा केवल
हे चिर पुराण ! तुम चिर नवीन'।

कुलकर हम यही कह सकते है कि महात्मा गाँधीजी अपने बहुमूल्य विचारों के कारण आज भी प्रस्तुत है। और उनके द्वारा मिली दर्शन, प्रकाश, प्रेरणा युग-युगों तक गूँजती रहेगी।

यों तो देशप्रेमी साहित्यकार असंख्य है पर शब्दों की सीमा तथा समय को ध्यान में रखते हुए उन सभी साहित्यकारों तथा उनकी कृतियों पर प्रकाश डालने में मैं असमर्थ हूँ।

संदर्भ ग्रंथ

1. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद-1
2. हिंदी के चर्चित उपन्यासकार, डॉ. भगवतीशरण मिश्र, राजपाल एण्ड सन्स, 1590 कश्मीरि गेट, नई दिल्ली
3. काव्य कणिका, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली
4. रामधारीसिंह दिनकर, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली
5. आधुनिक काव्य संग्रह, सं. डॉ. रामकुमार वर्मा, 1964, श्री रामप्रताप त्रिपाठी, सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग

****